International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2021, Accepted: 01-09-2021, Published: 17-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 46-49

आवां तथा पीली आँधी में स्त्रीविमर्श

प्रीती अहिर

शोध छात्रा, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

भारतीय समाज में आदिकाल से ही नारी के मान-मर्यादा की बात आती है तो लोगों की सोच में दोहरापन आ जाता है। आर्थिक और सामाजिक तौर पर स्त्री के अधिकारों का संघर्ष सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर अलग-अलग है। समाज और परिवार में एक मनुष्य के रूप में मान्यता प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य है। परिवार के बंधनों के कारण नारी के पास न तो कोई विकल्प रहता है, न चुनाव की क्षमता। एक स्वाभिमान ही है जो किसी निर्बल या अबला स्त्री को भी मोम से फौलाद बना देता है।

मूलशब्दः संबंध, अहं की भावना, सजगता, अस्तित्व

प्रस्तावना

स्त्री विमर्श का अर्थ है स्त्री को केंद्र में रखकर समाज, संस्कृति, परंपराएँ एवं इतिहास का पुनः निरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया। हमारे भारतीय समाज में आदिकाल से ही सभी 'या देवी सर्वभूतेषु' का मंत्रोच्चारण करते आ रहे हैं लेकिन जब नारी के मान-मर्यादा की बात आती है तो लोगों की सोच में दोहरापन आ जाता है।

'मनुस्मृति' के नौवें अध्याय में स्त्री-पुरुष संबंधों का इस प्रकार वर्णन है:

पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव धर्मे वर्त्मनि तिष्ठतोः।
संयोगे विप्रयोगे च धर्मान्वक्ष्यामि शाश्वतान्।।९.१।।

अस्वतन्त्राः स्त्रियः कार्याः पुरुषैः स्वैर्दिवानिशम्।
विषयेषु च सज्जन्त्यः संस्थाप्या आत्मनो वशे।।९.२।।

जिसका अर्थ है- अपने सनातन धर्म में स्थित पुरुष और स्त्रियों के संयोग और वियोग समय के धर्म कहे जाते हैं - पुरुष को अपनी स्त्रियों को कभी स्वतंत्र न होने देना चाहिए। नाच-गान में आसक्त स्त्रियों को अपने वश में रखना चाहिए।

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यं अर्हति।।९.३।।

कालेऽदाता पिता वाच्यो वाच्यश्चानुपयन्पतिः।
मृते भर्तरि पुत्रस्तु वाच्यो मातुररक्षिता।।९.४।।

सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसङ्गेभ्यः स्त्रियो रक्ष्या विशेषतः।
द्वयोर्हि कुलयोः शोकं आवहेयुररक्षिताः।।९.५।।

इमं हि सर्ववर्णानां पश्यन्तो धर्मं उत्तमम्।
यतन्ते रक्षितुं भार्यां भर्तारो दुर्बला अपि।।९.६।।

बालकपन में पिता, युवावस्था में पति और बुढ़ापा में पुत्र रक्षा करे, स्त्री स्वतंत्र होने योग्य नहीं है।

समय पर कन्यादान न करने से पिता, ऋतुकाल में सहवास न करने से पति और पिता के बाद माता की रक्षा न करने से पुत्र निंदा का पात्र होता है। साधारण कुसंगों से भी स्त्रियों को बचाना चाहिए क्योंकि असुरक्षित स्त्रियाँ दोनों कुलों को दुःख देती है। इसप्रकार संपूर्ण वर्णों का धर्म है। दुर्बल पति भी अपनी स्त्रियों की रक्षा का उपाय करते हैं।[1] यहाँ मनु द्वारा स्त्रियों को संरक्षण प्रदान करने की व उनकी रक्षा का दायित्व पुरुषों का है, इस बारे में बताया गया है। किंतु इसका लाभ उठाते हुए पुरुष समाज जिम्मेदारी निभाने की आड़ में उस पर अधिकार करने का इच्छुक बनता चला गया। समाज के दबावों के चलते जहाँ उसे कई तरह की कुरीतियों का सामना करना पड़ता है, वही राजनैतिक स्तर पर हालात और भी बुरे हैं। आर्थिक और सामाजिक तौर पर पुरुषों पर पूर्ण रूप से निर्भरता स्त्रियों की दुर्दशा का प्रमुख कारण है। स्त्री के अधिकारों का संघर्ष सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर अलग-अलग है। केवल भारत में ही नहीं, पाश्चात्य देशों में भी स्त्री की स्थिति कुछ भिन्न नहीं थी। सदियों तक संपूर्ण विश्व में नारी पुरुष सत्तात्मकता के कारण शोषण का शिकार होती रही है। स्त्री-विमर्श के दौर में परिस्थितियों में सर्वत्र परिवर्तन हुए। जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक 'दी सब्जेक्शन ऑफ़ वीमेन' के हिंदी अनुवाद 'स्त्रियों की पराधीनता' के अनुसार, 'मिल सदियों पुराने पुरुष-वर्चस्ववादी मूल्यों-विचारों-संस्थाओं के टूटने की प्रक्रिया लंबी मानते थे और इस प्रक्रिया की शुरुआत के लिए स्त्री-पुरुषों के बीच पूर्ण कानूनी समानता, स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा और रोजगार के समान अवसर तथा सामाजिक-राजनीतिक सक्रियताओं में स्त्रियों की भागीदारी को अनिवार्य बुनियादी शर्त मानते थे। साथ ही उनका विशेष जोर इस बात पर था कि स्त्रियाँ व्यक्तिगत और समग्र रूप से अपने हालात के बारे में मुखर हों। स्त्रियों की उत्पीड़ित सामाजिक स्थिति के मद्देनजर उनका यह भी मानना था कि स्त्रियाँ अपनी मुक्ति के लक्ष्य के प्रति तब तक समर्पित नहीं हो सकतीं, जब तक पुरुष भी उनके आंदोलन का समर्थन नहीं करेंगे।'[2] सामाजिक परिवेश में ही व्यक्ति अपने विकास के लिए प्रयास करता है। भारतीय समाज में स्त्रियों की अपने अधिकारों के प्रति सजगता अपनी स्थिति में बदलाव लाने की दिशा में उठाया गया एक कदम है। वह केवल समाज और परिवार में एक व्यक्ति के रूप में आदर-सम्मान प्राप्त करना चाहती है। एक मनुष्य के रूप में मान्यता प्राप्त करना ही उसका उद्देश्य है।

लेखिका चित्रा मुद्गल जी के 'आवां' उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंध, अहं की भावना, अस्तित्व व अधिकार के प्रति सजगता आदि का वर्णन पात्रों के माध्यम से विस्तृत रूप से मिलता है। नमिता का संजय कनोई से संबंध उसे गर्भवती बनाता है लेकिन गर्भपात होने पर उसे संजय की असलियत का पता चलता है कि वह कभी भी अपनी पत्नी निर्मला को तलाक देकर उससे शादी करने का इच्छुक नहीं है। संजय कनोई केवल नमिता से अपना बच्चा चहता है और अपने मर्द होने और बच्चा पैदा करने के दंभ को सिद्ध करना चाहता है, जिसमें मैडम वासवानी उसकी मदद करती है। सुनंदा का प्रेमी सुहैल जो कि जाति से मुस्लिम व सुनंदा हिंदू है, उसके गर्भवती होने पर शादी के लिए नाम व धर्म परिवर्तन की माँग करता है जिसे सुनंदा अस्वीकार कर देती है और अपनी जिद्द पर अपनी बेटी को जन्म देती है। किशोरीबाई और देवीशंकर पांडे के आपसी संबंध है लेकिन उन्होंने भी विवाह नहीं किया। पवार नमिता के प्रति आकर्षित होता है लेकिन अपने प्यार को वह राजनीति से जोड़कर देखता है कि दलित समाज के साथ-साथ उसे नमिता के कारण ब्राह्मण समाज के वोट भी हासिल हो सकते हैं। गौतमी

और स्मिता स्त्री-पुरूष संबंधों को अपने अनुसार स्वीकार करके सुखी होने का आडंबर करते हैं।

नमिता की अहं भावना ही है जो वह अन्नासाहब के दुराचार के बाद आघाडी कार्यालय की नौकरी छोड़ने का निश्चय करती है। नमिता सिद्धार्थ के प्रस्ताव का विरोध करते हुए अपने अहं भाव को बनाए रखती है। स्मिता अपने बाप मटका किंग की व्याभिचारिता का शिकार अपनी बड़ी बहन के प्रति संवेदनशील है जो अपने बाप को राक्षस कहकर संबोधित करती है और उनकी मौत पर नमिता से कहती है- "मैय्यत में शरीक होना है ताकि नंगी आँखों बाप को भस्मीभूत होता देख सकूँ।"[3] किशोरीबाई में जहाँ समर्पण दिखाई देता है वहीं देवीशंकर पांडे के अस्पताल में भर्ती होने व उनकी मृत्यु पर उनके अंतिम दर्शन करने न आना उनके स्त्रीत्व अहं को ही दर्शाता है। जो रिश्ता देवीशंकर द्वारा समाज के समक्ष स्वीकारा नहीं गया उसे वह निष्ठा के साथ निभाते हुए स्वयं से उजागर नहीं करती। नीलम्मा का अहं भाव ही उसे धनी मालकिनों की यौन तृप्ति करके कमाए गए पैसों को दुत्कारता है व उसे सबल बनाता है।' आवां' की पात्रा नीलम्मा अपनी कर्मठता और स्वावलंबन से स्वाभिमान अर्जित करती है। नमिता अपने अस्तित्व की लड़ाई के प्रति सजग है किंतु वह लोगों के झूठे आडंबरों की बलि चढ़ती है। जो अंत में नीलम्मा की कहानी से प्रभावित होकर उद्देश्य प्राप्ति का निश्चय करती है। सुनंदा जहाँ धर्म परिवर्तन को अस्वीकार करती है वहीं बिनब्याह माँ बनने पर मिल से जचकी के उपरांत मिलने वाली छुट्टी के अस्वीकार होने पर विरोध करके अपने अधिकारों के प्रति सजगता को दर्शाती है। स्मिता अपने अस्तित्व व अधिकारों के प्रति सजग है जिसके चलते वह अपने पिता को परिवार की खुशियों के बीच काँटा मानती है।

लेखिका प्रभा खेतान ने 'पीली आँधी' उपन्यास में विवाहेत्तर प्रेम प्रसंगों का भी चित्रण किया गया है जिसमें दैहिक आकर्षण के साथ मित्रता एवं विवाह की इच्छा सम्मिलित है। लेकिन अनूठा त्रासद प्रेम प्रसंग बन जाता है जब प्रेमी की हत्या करवा दी जाती है। माधो बाबू ने अपनी जायदाद की आधी पाती पद्मावती को दी थी और मरते वक्त सुराणा को कहा था कि वे पद्मावती के हितों का ध्यान रखेंगे। सोमा अपने पति गौतम के व्यवहार के कारण उससे नफरत करती है। गौतम समलौंगिकता की गलियों में भटक चुका था उसे पूजारी और ड्राइवर ही अच्छे लगते थे। जिसके कारण वह सोमा को संतान सुख नहीं दे सका। सोमा और गौतम का वैवाहिक जीवन असफल है। मातृत्व की चाहत में सोमा विवाहित पुरुष के साथ बिना विवाह कर अपना घर बसाती है। चित्रा व सुजीत सेन के अपसी प्रेम संबंध मजबूत नहीं है। सुजीत सोमा से कहते हैं कि हाँ मैं पहले चित्रा से बहुत प्यार करता था लेकिन अब नहीं। दूसरी औरत के पेट में अपने पति की बच्चा होते हुए भी चित्रा रोती नहीं। यहाँ सेन ने गलत किया है अपनी पत्नी को धोखा दिया है। लेकिन चित्रा सेन को नफरत नहीं करती है। उसने अपनी पति की प्रेमिका सोमा के साथ शांती पूर्ण व्यवहार किया।

सोमा को गौतम के साथ बिताए गए क्षणों में न कोई कोमलता मिली और न जीवन का एहसास। गौतम की अपनी भूख, जो कभी-कभी जागती थी और उस इच्छा की संतुष्टि के लिए सोमा का उपयोग करता था। शायद इसी कारण से सोमा गौतम को भूलना चाहती थी। जिसको उसने केवल झेला था, सहन किया था, मगर जिसको कभी जीया नहीं था। सुजीत द्वारा सोमा के पेट में उसके बच्चे के बारे में न बताने पर चित्रा के अहं को ठेस पहुँचती है। और वह कह उठती है जहाँ प्रेम नहीं वहाँ विवाह की व्यवस्था को ढोने का क्या लाभ।

गौतम रात भर अपने मित्रों के साथ घूमते रहते थे। गौतम अपनी इन बुरी प्रवृत्तियों के कारण

सोमा को संतान सुख नहीं दे सका। दोनों हमेशा झगड़ा करते रहते हैं। सोमा सेन से प्यार करती है। क्योंकि उसे बच्चा चाहिए जो गौतम नहीं दे सकते। सोमा सेन से प्रेम करना गलत नहीं मानती है। सोमा का पति इसी के बारे में पूछने पर वह सबकुछ कबूल भी करती है-"क्या यह एक गलती थी? क्षणों का उन्माद था। मैं हाँ और न में उत्तर चाहता हूँ।"

"नहीं"
"यानी"
"मैंने जानबूझ कर सब कुछ किया है ।"
"तुम उस बंगाली प्रोफेसर से प्यार करती हो?"
"हाँ"[4]

अंत में सोमा सेन के पास चली जाने की तैयारी करती है सोमा समझ रही थी कि वह सुजीत के साथ काफी दूर चली गई है। उसके बिना जिंदगी जीना मुश्किल है।

स्त्री-पुरूष संबंध या विवाहेत्तर प्रेम संबंध दोनों उपन्यासों में दिखलाई पड़ते हैं। पति का अपने पत्नी के अलावा किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करना और पत्नी का अपने पति के अलावा दूसरे पुरुष से प्रेम करना पारिवारिक बंधनों के टूटने का कारण बनता है। परिवार के बंधनों के कारण नारी के पास न तो कोई विकल्प रहता है, न चुनाव की क्षमता। पारिवारिक बंधन टूटने पर नारी ही अधिक शोषित होती जाती है। नारी को पुरुष के समान स्वतंत्रता नहीं मिलती है जिसके चलते स्वाभाविक तौर पर उसके मन में कम संतोष रह सकता है। स्त्री द्वारा अपने स्वाभिमान तथा अपनी भावनाओं को महत्व देना पुरूष व समाज की नज़र में अहं का भाव समझा जाता है। एक स्वाभिमान ही है जो किसी निर्बल या अबला स्त्री को भी मोम से फौलाद बना देता है और जब अबला कही और समझी जाने वाली कोई स्त्री फौलाद में तब्दील होती है तो वह चेतना बन कर उभरती है।

संदर्भ सूची

1. मनु-स्मृति अर्थात मानव धर्म-शास्त्र-प. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, पृ 318-319
2. स्त्रियों की पराधीनता-जॉन स्टुअर्ट मिल, पृ 30
3. आवां-चित्रा मुद्गल, पृ 376
4. पीली आँधी-प्रभा खेतान, पृ 246